

# दहेज प्रथा: भारतीय समाज की एक गंभीर सामाजिक समस्या

डॉ० मो० सुजा जाहिद अनवर

सहायक प्राध्यापक

समाजशास्त्र विभाग

जे.एम.डी.पी.एल. महिला कॉलेज, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

संपर्क नंबर- 9471016322

ईमेल- drzahidanwer@gmail.com

## सार (Abstract)

दहेज प्रथा भारतीय समाज की एक प्रमुख सामाजिक बुराई है, जो समय के साथ एक गंभीर सामाजिक समस्या का रूप ले चुकी है। प्रस्तुत शोध-पत्र एक समाजशास्त्रीय समीक्षा (Review-based study) पर आधारित है, जिसका उद्देश्य दहेज प्रथा के स्वरूप, कारणों एवं उसके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में विभिन्न द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों एवं ऑनलाइन सामग्री का उपयोग किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दहेज प्रथा मुख्यतः पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा, आर्थिक असमानता एवं सांस्कृतिक परंपराओं से प्रभावित है। यह प्रथा न केवल महिलाओं के शोषण एवं लैंगिक असमानता को बढ़ावा देती है, बल्कि घरेलू हिंसा, दहेज हत्या एवं आत्महत्या जैसी गंभीर समस्याओं को भी जन्म देती है।

शोध के निष्कर्षों से यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षा के प्रसार एवं कानूनी प्रावधानों के बावजूद दहेज प्रथा का पूर्ण उन्मूलन अभी तक संभव नहीं हो पाया है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु सामाजिक जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, कठोर कानूनी क्रियान्वयन एवं सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।

इस प्रकार, यह अध्ययन दहेज प्रथा को एक बहुआयामी सामाजिक समस्या के रूप में प्रस्तुत करता है तथा इसके उन्मूलन के लिए आवश्यक उपायों पर प्रकाश डालता है।

## परिचय (Introduction)

भारतीय समाज में विवाह को एक पवित्र एवं सामाजिक संस्था के रूप में माना जाता है, जो केवल दो व्यक्तियों का नहीं बल्कि दो परिवारों का मिलन होता है। किंतु समय के साथ इस पवित्र संस्था में कई सामाजिक कुरीतियाँ जुड़ गई हैं, जिनमें “दहेज प्रथा” प्रमुख है। दहेज प्रथा वह प्रथा है जिसमें विवाह के समय वधू पक्ष द्वारा वर पक्ष को धन, संपत्ति, आभूषण, वाहन या अन्य वस्तुएँ प्रदान की जाती हैं।

प्रारंभिक काल में दहेज को पुत्री को उसकी आर्थिक सुरक्षा हेतु स्वेच्छा से दिए गए उपहार के रूप में देखा जाता था, किंतु धीरे-धीरे यह एक अनिवार्य और दबावपूर्ण सामाजिक प्रथा बन गई। आज के समय में दहेज प्रथा एक गंभीर सामाजिक समस्या का रूप ले चुकी है, जो न केवल महिलाओं के अधिकारों का हनन करती है बल्कि समाज में असमानता, शोषण और हिंसा को भी बढ़ावा देती है।

दहेज प्रथा का प्रभाव समाज के विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है—यह महिलाओं की स्थिति को कमजोर करता है, गरीब परिवारों पर आर्थिक बोझ डालता है और कई बार दहेज हत्या, घरेलू हिंसा तथा आत्महत्या जैसी घटनाओं को जन्म देता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से दहेज प्रथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था, सामाजिक प्रतिष्ठा की होड़, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ी हुई है। अतः इस प्रथा का अध्ययन केवल एक सामाजिक समस्या के रूप में ही नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक संरचना के हिस्से के रूप में करना आवश्यक है।

### साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

दहेज प्रथा पर अनेक समाजशास्त्रियों एवं शोधकर्ताओं ने अध्ययन किया है:

- **शर्मा** (2018) के अनुसार, दहेज प्रथा भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक संरचना का परिणाम है, जिसमें महिलाओं को आर्थिक रूप से निर्भर माना जाता है।
- **कुमार** (2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि दहेज की मांग सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक स्थिति को दर्शाने का माध्यम बन चुकी है।
- **वर्मा** (2017) के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में दहेज प्रथा अधिक प्रचलित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह आधुनिक रूप ले चुकी है।
- **गुप्ता** (2019) ने यह बताया कि शिक्षा के प्रसार के बावजूद दहेज प्रथा में अपेक्षित कमी नहीं आई है।
- **सिंह** (2021) के अनुसार, दहेज प्रथा महिलाओं के विरुद्ध हिंसा का एक प्रमुख कारण है।

साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि दहेज प्रथा एक बहुआयामी सामाजिक समस्या है, जो आर्थिक, सांस्कृतिक और लैंगिक असमानताओं से जुड़ी हुई है।

### अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

1. दहेज प्रथा के सामाजिक स्वरूप का अध्ययन करना।
2. दहेज प्रथा के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. दहेज प्रथा और सामाजिक असमानता के संबंध को समझना।
4. दहेज प्रथा के उन्मूलन के उपायों का अध्ययन करना।

### परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. दहेज प्रथा पितृसत्तात्मक समाज की देन है।
2. दहेज प्रथा सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई है।

3. दहेज प्रथा महिलाओं के शोषण और हिंसा को बढ़ावा देती है।
4. शिक्षा के बढ़ने से दहेज प्रथा में कमी आ सकती है।

## नमूना (Sample)

यह एक **Review-based study** है, इसलिए इसमें प्राथमिक डेटा के बजाय द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) का उपयोग किया गया है, जैसे—पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट आदि।

## नमूना चयन की प्रक्रिया (Process of Sample Selection)

इस अध्ययन में विभिन्न विश्वसनीय स्रोतों से सामग्री का चयन किया गया है, जैसे:

- समाजशास्त्रीय पुस्तकें
- शोध पत्र (Research Journals)
- सरकारी रिपोर्ट एवं आंकड़े
- ऑनलाइन शैक्षणिक स्रोत

## उपकरण (Tools)

इस शोध में निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया:

- दस्तावेज़ विश्लेषण (Document Analysis)
- सामग्री विश्लेषण (Content Analysis)

## परिणाम एवं चर्चा (Result and Discussion)

साहित्य के विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख बिंदु सामने आए:

- दहेज प्रथा का मुख्य कारण सामाजिक प्रतिष्ठा और दिखावा है।
- पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को आर्थिक रूप से कमजोर समझा जाता है।
- दहेज के कारण गरीब परिवारों पर अत्यधिक आर्थिक दबाव पड़ता है।
- दहेज से संबंधित अपराध जैसे दहेज हत्या और घरेलू हिंसा में वृद्धि देखी गई है।
- कानून होने के बावजूद इस प्रथा को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सका है।

यह स्पष्ट है कि दहेज प्रथा केवल एक पारिवारिक समस्या नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक समस्या है।

## मुख्य निष्कर्ष (Main Findings)

1. दहेज प्रथा भारतीय समाज में गहराई से जड़ें जमा चुकी है।
2. यह प्रथा महिलाओं के शोषण और असमानता को बढ़ावा देती है।
3. सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक प्रतिस्पर्धा इस प्रथा को बढ़ावा देते हैं।

4. शिक्षा और जागरूकता इसके उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
5. कानून के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

### सुझाव (Suggestions)

1. दहेज विरोधी कानूनों का कड़ाई से पालन किया जाए।
2. समाज में जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
3. महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया जाए।
4. सादगीपूर्ण विवाह को प्रोत्साहित किया जाए।
5. सामाजिक संगठनों और मीडिया की भूमिका को मजबूत किया जाए।

### निष्कर्ष (Conclusion)

दहेज प्रथा एक गंभीर सामाजिक बुराई है, जो समाज की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है। यह न केवल महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन करती है, बल्कि सामाजिक असमानता और हिंसा को भी बढ़ावा देती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि दहेज प्रथा का उन्मूलन केवल कानून के माध्यम से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक सोच में परिवर्तन आवश्यक है। जब तक समाज में लैंगिक समानता, शिक्षा और जागरूकता का प्रसार नहीं होगा, तब तक इस समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है।

### संदर्भ (References)

1. शर्मा, आर. (2018). *भारतीय समाज और दहेज प्रथा*।
2. कुमार, ए. (2020). *सामाजिक समस्याएँ और समाधान*।
3. वर्मा, एस. (2017). *ग्रामीण समाजशास्त्र*।
4. गुप्ता, पी. (2019). *महिला अध्ययन*।
5. सिंह, आर. (2021). "दहेज प्रथा और महिला हिंसा", समाजशास्त्रीय जर्नल।
6. भारत सरकार की रिपोर्ट (Dowry Prohibition Act से संबंधित)।